

4, 19. अय पर्यपति Çat. Br. 3, 6, 4, 18. 7, 4, 16. KĀTJ. Ça. 6, 3, 11. MAHIDH. zu VS. 5, 27. 6, 3.

— वि spiessen, durchbohren: अन्नप्रज्जराट्की तीक्ष्णप्रज्जी व्युषतु AV. 4, 37, 5. (अष्टभिः) व्युषतु 7. 8, 7, 9. इतरं शवं व्युषति Çat. Br. 1, 8, 3, 18.

अर्षणा (von 1. अर्ष) adj. *fliegend, beweglich* Nir. 4, 7; vgl. अर्षणिन् (für eine Etym. gebildet) 16.

अर्षणी (von 2. अर्ष) f. *stechender, bohrender Schmerz*: याः सीमानं विरूजति मूर्धानं प्रत्यर्षणीः AV. 9, 18, 13. 16. 21.

अर्षम् = अर्षास् AK. 2, 6, 3, 5, Sch.

अर्ह, अर्हति (ep. auch अर्हति), अर्हन्तुम् ved. P. 6, 1, 36. अर्हन्तुम् klass. Sch. mit dem inf. P. 3, 4, 65. Bis jetzt vom simpl. nur das praes. und der inf. अर्हसि (RV. 10, 77, 1) zu belegen. ehren Dhātup. 17, 89. 1) verdienen, werth sein: a) Ansprüche, ein Recht auf Etwas (acc.) haben: सोमानां प्रथमः पीतिमर्हसि RV. 1, 134, 6. स इहाधूमर्हति 10, 85, 3. 2, 14, 2. 4, 47, 2. 5, 51, 6. सोमाङ्कति नार्ह्य Çat. Br. 3, 6, 3, 19. इदं सर्वं वै ब्राह्मणो ऽर्हति M. 1, 100. 105. 2, 45. 8, 31. 148. 152. 9, 106. 12, 100. गुरुवन्मानमर्हति 2, 208. सत्कारमितिरो ऽर्हति 3, 137. सात्त्व्यम् 8, 62. सर्वं संस्कारम् 10, 69. न स्त्री स्वातह्यमर्हति 9, 3. 143. 214. वीरो राज्यमर्हति Vid. 72. ननु गर्भः पित्र्यं रिक्थमर्हति Çāk. 91, 2. किमिव नामायुष्मानमरेष्टरात्रार्हति 97, 15. med.: त्रिषु लोकेषु यो राज्यम् — अर्हते नृपः Hip. 1, 36. अर्हसे च — मया समभिभाषणम् R. 5, 33, 24. रावणो नार्हते पूषाम् 6, 93, 48. das Recht haben, dürfen, mit einem inf.: तस्मान्नार्हाम्यनृतं वक्तुम् PRAÇNOR. 6, 1. स सोमं पातुमर्हति M. 11, 7, 18. न स तल्लब्धुमर्हति 8, 147. नायम् — मतो जीवितुमर्हति Draup. 9, 7. न मादृशी वामभिभाषुमर्हति 3, 2. N. 18, 10. 11. तं तु नार्हामि संक्लेष्टुम् R. 2, 22, 14. med.: सलिलं नार्हसे प्राज्ञ दातुमेवं हि लौकिकम् R. 1, 42, 18. — b) zu Etwas verpflichtet sein, unterliegen, verfallen in, mit dem acc.: तत श्रौकार्मर्हति darauf hat er die Silbe om zu sprechen M. 2, 75. दण्डमर्हति er unterliegt einer Strafe 8, 194. 32. 205. 294. MBh. 3, 1043. पञ्चकं शतमर्हति er verfällt in eine Strafe von fünf vom Hundert M. 8, 139. 241. वधम् 267. 323. 364. 366. मौण्ड्यम् 370. 375. पाणिच्छेदनम् 280. पुनःसंस्कारम् 9, 176. 11, 150. सर्वस्वहारम् 9, 242. परिभाषणम् 283. त्यागम् 10, 113. 8, 389. आधिश्चोपनिधिश्चोभो न कालात्ययमर्हति: verfallen nicht 145. नान्यदन्येन संसृष्टे द्वयं विक्रयमर्हति unterliegt nicht dem Verkauf, darf nicht verkauft werden 203. नायं परुषमर्हति R. 4, 33, 2. न ते गात्राण्युपचारमर्हति deine Glieder brauchen keinen Dienst zu leisten Çāk. 66. verpflichtet sein, müssen, mit dem inf.: तावतो दातुमर्हति M. 8, 155. न दण्डं दातुमर्हति er ist nicht verpflichtet, er braucht nicht die Strafe zu zahlen 341. 159. 233. 9, 208. नान्यत्स्त्री दातुमर्हति Jāñ. 2, 49. ज्ञानीषे त्वं यथा राजा सम्यग्वृत्तः सदा त्वयि । तस्य त्वं विषमस्यस्य साहाय्यं कर्तुमर्हसि || N. 8, 13. तद्द्वेषाच्च — ममापि द्वेषुमर्हति MBh. 3, 15224. R. 2, 21, 54. Çāk. 30, 5. अर्थना मयि भवद्भिः — कर्तुमर्हति muss erfüllt werden Nāish. 5, 112. — c) werth sein, aufwiegen: यस्य ते हरः शतं सौवा अर्हति RV. 10, 158, 2. 5, 86, 5 (s. u. अर्वत्). 8, 20, 18. 10, 77, 1. भूयो वा घतः सोमो राजार्हति Çat. Br. 3, 3, 3, 1. न कियच्चनार्हति 5, 4, 4, 10. KĀTJ. Ça. 7, 8, 7. 8. एकस्तान् — सर्वानर्हति M. 3, 131. सर्वं ते जपयज्ञस्य कलां नार्हति योऽशोम् 2, 86. Arā. 11, 3. नैषधो ऽर्हति वैदर्भी तं चेयम् N. 16, 20. — 2) vermögen, können, mit dem inf. (acc.): एतावदेडेष्टस्त्वं भूयो वा दातुमर्हसि RV. 5, 79, 10. नहि मित्रस्य वरुणस्य धासिमर्हामसि प्रमिषं सान्वयोः 4, 53,

7. न त्वा निकर्तुमर्हति AV. 10, 1, 26. 19, 22, 11. होत्रमर्हति: VS. 28, 19. ब्रह्मा भवितुमर्हति Çat. Br. 12, 6, 4, 41. 2, 1, 3, 11. 4, 4, 10. 6, 7, 4, 1. को हि त्वेवं ब्रुवत्तमर्हति प्रत्याख्यातुम् 14, 9, 4, 11 = Bṛh. Âr. Up. 6, 2, 8. कस्तं मदामर्दे देवं मदन्यो ज्ञातुमर्हति KATHOP. 2, 21. विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति BHAG. 2, 17. सशरीरो दिवं यातुं नार्हत्यकृतपावनः VIÇV. 10, 24. अनुद्योगेन तैलानि तिलेभ्यो नातुमर्हति Hit. Pr. 29. R. 2, 44, 8. — 3) überaus häufig vertritt die 2te Person von अर्ह्ति mit einem inf. die Stelle eines imperat.: अन्नप्रभवानां च धर्मानो वक्तुमर्हसि M. 1, 2. BHAG. 10, 16. तथापि त्वं नैनं शोचितुमर्हसि 2, 26. 16, 24. त्वमप्यज्ञानसमाविश्य साहाय्यं कर्तुमर्हसि N. 6, 14. 12, 10. 11. 99. 14, 7. 17, 18. VIÇV. 7, 17. Çāk. 54, 22. तं देवः श्रोतुमर्हति 64, 12. 61, 12. RAGH. 1, 72. 88. 3, 46. Hit. 17, 6. 27, 9. एकार्यसमुपेतं मां न प्रेषयितुमर्ह्य N. 3, 7. 9, 33. med.: शोचितुं नार्हसे देव यथान्यः प्राकृतस्तथा R. 3, 71, 11. दोषान्स्वानार्हसे ऽन्यस्मै वक्तुम् MBh. 3, 1580. In dieser Verbindung ist das einfache अर्ह्ति ein geschwächtes müssen, das mit n verbundene — ein geschwächtes nicht dürfen. — caus. अर्ह्यति ehren Dhātup. 33, 58. 34, 24. स्रग्विणं तत्प्रासीनमर्ह्येत (beschenke er) — गवां M. 3, 3. राजर्षिकस्नातकगृह्णन् — अर्ह्येन्मधुपर्केण 119. अर्ह्यन् MBh. 1, 6714. राजर्षिकं कृतं मधुपर्कपाणिः BHATT. 1, 17. अर्हति geehrt, verehrt AK. 3, 2, 51. H. 446. — Vgl. अर्ध.

— अर्ति besonders werth sein, einen Vorzug haben: अर्ति यदयो अर्हन्तु RV. 2, 23, 15.

— अर्भि caus. partic. praet. pass. अर्भ्यर्हति geehrt, ehrwürdig P. 2, 2, 34, Vārtt. 3. AK. 3, 4, 86. — Vgl. अर्भ्यर्हणीय.

— प्र med. sich auszeichnen: प्र रौदसी मूर्तो विभुरर्हिरे RV. 10, 92, 11.

अर्ह (von अर्ह्ति) 1) adj. f. आ; am Ende eines comp. P. 3, 2, 12. a) verdienend, würdig, Ansprüche oder ein Recht auf Etwas habend: अर्हवभोजयन् M. 8, 392. Das obj. im acc.: नैवार्हः पैत्रिकं रिक्थम् 9, 144. अर्हा भवनवासम् SIV. 3, 9. संस्कारमर्हस्त्वं न च लप्स्यसे R. 6, 8, 26. geht im comp. voran: मानार्ह M. 2, 137. पूजार्ह 9, 26. VIÇV. 2, 17. 3, 7. सत्कारार्ह N. 9, 10. मण्डनार्ह 16, 13. सुखार्ह 17. R. 2, 92, 14. RAGH. 1, 76. मादृशो न संभाषणार्हः ÇUK. 41, 17. mit dem inf.: अर्हो ऽसि कपिराज्यस्य श्रियं भोक्तुमनुत्तमम् R. 4, 36, 17. स्तोतुम् gelobt zu werden Vor. 26, 25. — b) verdienend, unterworfen, unterliegend; das obj. im acc.: न परित्यागमर्ह्येत् मत्सकाशात् VIÇV. 3, 12. वृथा मरणमर्हस्त्वम् Hip. 4, 50. geht im comp. voran: निन्दार्ह M. 8, 19. शतदण्डार्ह 240. कशार्ह H. 1236. मार्हो गम् ein dem medium unterworfenen गम् Vor. 8, 97. 26, 28. — c) dürfend, mit dem inf.: तस्मान्नार्हो वयं कर्तुं धार्तराष्ट्रान् BHAG. 1, 37. नार्हो मत्पुरुषैर्नेतुम् er darf nicht fortgeführt werden SIV. 5, 15. — d) passend, angemessen: तत्र तेन सह संधिविग्रहो न युक्तः । केवलं यानमर्हं स्यात् PAKĀT. 152, 8. mit dem gen.: स भृत्यो ऽर्हो महीभुजाम् I. 98. fgg. तच्च दुरेद्राणां चार्हं न वितवताम् 8, 3. am Ende eines comp.: तत्कर्मार्ह AK. 2, 7, 27. नृपार्हो ऽर्थे 3, 4, 241. यज्ञार्ह H. 830. — e) kostend, werth: महार्ह R. 4, 50, 34. Vgl. शतार्ह, सहस्रार्ह. — 2) m. Indra ÇABDAR. im ÇKDR. — 3) f. अर्हा Ehrenbezeugung: तस्मै ह प्राप्तायार्हो चकार KHAND. Up. 5, 3, 6. — 4) n. pl. dass.: तेभ्यो ह प्राप्तेभ्यः पृथगर्हाणि कारयो चकार KHAND. Up. 5, 11, 5. — Vgl. अनर्ह, यथार्ह.

अर्हण (von अर्ह्ति im caus.) 1) n. Ehrenbezeugung, Verehrung: अर्हणं